Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 60-70**

वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में श्रीराम के लिएप्रयुक्त विशेषणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ओंकार शामसुंदर जोशी, Secretary cum Organiser, Vaidika Samshodhana Mandala, Pune onkarjoshi.87@gmail.com, 9921255028

डॉ. सुप्रिया आशिष महाजन, Assistant Professor, IKS-EDS Centre of Central Sanskrit University, Deccan College, Pune, supriyamahajan210707@gmail.com, 7276684157

डॉ. नीलेश जोशी Senior Linguist, Indian Institute of Technology Bombay, Mumbai, joshinilesh60@gmail.com,

Accepted: 29/01/2026
Published: 29/01/2026 ***DOI: http://doi.org/ 10.5281/zenodo.18412756***

सारांश

वाल्मीकि रामायण के आरम्भ में ही महर्षि नारदमुनि द्वारा श्रीराम के गुणों का वर्णन है। बालकाण्ड के प्रथम सर्ग से श्रीराम का गुणवर्णन करनेवाले विभिन्न प्रकारके विशेषणों का प्रयोग किया गया है, जिनके द्वारा श्रीराम के जीवन को दृग्गोचर करने का प्रयास किया है। इस शोधनिबन्ध में उन सारे विशेषणों को सम्मीलित कर आङ्गिक, भावनिक, सामाजिक आदि निकषों पर वर्गीकरण कर विश्लेषण किया जा रहा है, जिसमें वाल्मीकि रामायणपर प्रातिभासिक राम की छबी एक मानव से लेकर परमात्मा तक किस प्रकार सार्थभूत है यह स्पष्ट हो जायेगा। विशिष्ट प्रसंग के,आधारके अनुसार वाल्मीकिद्वारा श्रीराम के लिए प्रयुक्त वैशिष्ट्यपूर्ण विशेषण और उनसे निर्देशित मनुष्यप्रवृत्तियां इन सभी का गभीर अध्ययन किया जा रहा है।

मुख्य शब्द: *आङ्गिक, औपमिक, औपाधिक, यौगिक, आध्यात्मिक, मानसिक, भावनिक, नैतिक*

1 प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय आर्ष महाकाव्यों में रामायण यह महाकाव्य प्रसिद्ध है। वाल्मीकि मुनि प्रस्तुत महाकाव्य के रचनाकार है। बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड ये वाल्मीकि रामायण के प्रमुख सात काण्ड हैं। रामायण का हर एक काण्ड सर्गों मे विभक्त है तथा प्रत्येक सर्ग की विषयवस्तु श्लोकों में बद्ध है। रामायण में 645 सर्ग और 24,000 श्लोक हैं।

बालकाण्ड में लगभग 77 सर्ग तथा 2280 श्लोक प्राप्त होते हैं। इसके प्रथमसर्ग में 'मूलरामायण' का वर्णन प्राप्त होता है जिस में वाल्मीकि ऋषि ने नारदजी को सङ्क्षेप में सम्पूर्ण रामकथा सुनाई है। द्वितीयसर्ग में क्रौञ्चमिथुनका प्रसंग और प्रथम आदिकाव्य की पङ्क्तियों का वर्णन है। तृतीय और चतुर्थसर्ग में रामायण के विषय तथा रामायण की रचना का वर्णन मिलता है। इसके पश्चात् अयोध्या-वर्णन, दशरथने किया हुआ पुत्रकामेष्टियज्ञ, तीन रानियों से चार पुत्रों का जन्म, विश्वामित्र का राम और लक्ष्मण को लेजाकर बला तथा अतिबला विद्याएँ प्रदान करना, राक्षसों का वध, सीतास्वयंवर आदि वृत्तान्त वर्णित हैं।

रामायण काव्य राम के चरित्र का वर्णन है। राम इस महाकाव्य के नायक है और सीता इसकी नायिका है । दशरथ, लक्ष्मण, भरत, हनुमान्, अङ्गद, सुग्रीव, विभीषण, रावण,
मन्दोदरीइ.अन्यपात्रभीअपनीविशिष्टताकोनिर्देशितकरतेहैं औरइनसभीपात्रोंकेलिए उनकेस्वभावानुसार, घटनामेंउनकेसहभागकेअनुसारविविधप्रकारकेविशेषणप्रयुक्तकियेगएहैं।वैसेहीरामकेलिएभीभिन्न-भिन्नप्रकारकेविशेषणोंकाउपयोगबालकाण्डमेंकियागयाहै। अतःइस शोधनिबन्ध में उन सारे विशेषणों को सम्मीलित कर आङ्गिक, भावनिक, सामाजिक आदि निकषों पर वर्गीकरण कर विश्लेषण किया जा रहा है, और विशिष्ट प्रसंग के आधारके अनुसार वाल्मीकि ने श्रीराम के लिए जिन वैशिष्ट्यपूर्ण विशेषणों का विचार किया है।उनकाऔरउनसे निर्देशित मनुष्यप्रवृत्तियोंका गभीर अध्ययन किया जाएगा।

विशेषण-

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेष जानकारी देते है वह'विशेषण'कहलाते है। सामान्यतःगुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, प्रशस्तव, तुलनाबोधक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक, व्यक्तिवाचक और सार्वनामिक ये विशेषणों के भेद माने गये।

विशेषणों का वर्गीकरण-

विशेषणों का वर्गीकरण उनकी बालकाण्ड में वारंवारिता देखकर किया है । वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड अन्तर्गत राम के लिए कुल 213 प्रकार के विशेषण प्रयुक्त हैं । उन्हें निम्नलिखित कोष्टक में दिखाया है। विशेषणों के प्रमुखतः तीन गण किए है । पहला गण अधिकांश विशेषण, दूसरा गण संकीर्ण विशेषण (जिनमें 1 या 3 से अधिक विशेषण प्रयुक्त नहीं हैं), और तीसरा गण सम्मिश्र गण है जिस में पहले गण में परिगणित विशेषण भी आते हैं ।उन्हें किसी एक प्रकार में वर्गीकृत करना सम्भव नही हैं ।

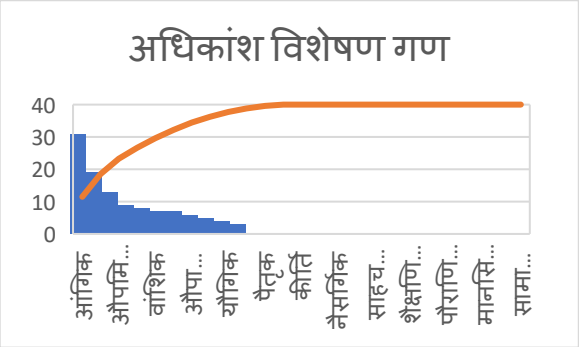

1. **अधिकांश विशेषण गण-**

जिस विशेषण का उपयोग करते समय विशेष रूप से उस विशेष्य व्यक्ति के अङ्ग-उपाङ्गों के विशेष को ध्यान में लिया गया है, उसे यहाँ आङ्गिक संज्ञा दी गयी है । इस प्रकार अधिकांश विशेषण गण में आध्यात्मिक, यौगिक, शस्त्रास्त्र, दैविक, शैक्षणिक, औपाधिक, धार्मिक, पौराणिक, भावनिक, नैतिक, मानसिक, वांशिक, बौद्धिक, राजकीय, औपमिक, सामाजिक, साहसिक, आङ्गिक ऐसे 18 प्रकार के विशेषणों का अन्तर्भाव किया हैं । इनकी वारंवारिता निम्नलिखित कोष्टक में दे रहें है ।

क्रम सं.	प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	आध्यात्मिक	3	1.33%
2	यौगिक	4	3.57%
3	शस्त्रास्त्र	—	—
4	दैविक	5	4.46%
5	शैक्षणिक	—	—
6	औपाधिक	6	10.71%
7	धार्मिक	—	—
8	पौराणिक	—	—
9	भावनिक	—	—
10	नैतिक	7	6.25%
11	मानसिक	—	—
12	वांशिक	8	3.57%
13	बौद्धिक	9	8.30%
14	राजकीय	—	—

15	औपमिक	13	11.60%
16	सामाजिक	—	—
17	साहसिक	19	8.48%
18	आङ्गिक	31	13.83%

अधिकांश विशेषण गण में आङ्गिक विशेषण ही सबसे अधिक 31 उदाहरण हैं; जो कुल प्रतिशत 18.83% हैं । उसके बाद 19 उदाहरण वाले साहसिक कर्म पर निर्धारित हैं । उपमा विशिष्ट और सामाजिकता निर्दिष्ट करने वाले 13 विशेषण हैं । इन्हे विस्तार से जानते हैं-

1.1आङ्गिक विशेषण-

अङ्ग -प्रत्यङ्ग संबन्धित जैसे मुख, आँखें, हात, पाँव आदि के विशेषता को अनुलक्षित कर बनाएं गएं विशेषण आङ्गिक विशेषण कहे गएं हैं । निम्नलिखित कोष्टक में सभी 31 उदाहरण दिए हैं ।

आङ्गिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	अभिद्रुत	1.30.13
2	आगतविस्मय	1.34.23
3	असंसक्त	1.19.17
4	आकुलेन्द्रिय	1.1.54
5	आजानुबाहु	1.1.10
6	एकप्रियदर्शन	1.1.3
7	कमलपत्राक्ष	1.76.12
8	कम्बुग्रीव	1.1.9
9	गूढजत्रु	1.1.10
10	ज्येष्ठ	1.1.20, 1.18.21, 1.20.12
11	तनय	1.20.25
12	पीनवक्षस्	1.1.11
13	प्रहृष्टवदन	1.22.21, 1.28.1
14	प्रियदर्शन	1.1.16, 1.1.18
15	महाबल	1.1.37, 1.1.59, 1.1.65
16	महाबाहु	1.1.9, 1.1.56, 1.1.65, 1.18.11, 1.27.7, 1.27.14, 1.29.2, 1.30.26
17	महाभाग	1.18.11
18	महाहनु	1.1.9
19	विग्रहवान्	1.21.10
20	विपुलांस	1.1.9
21	विशालाक्ष	1.1.11
22	सुमुख	1.1.36
23	सुललाट	1.1.10
24	सुशिरस्	1.1.10
25	स्निग्धवर्ण	1.1.11
26	ऊनषोडशवर्ष	1.20.2
27	शक्त	1.19.9
28	बाल	1.20.7, 1.20.25
29	रक्तोष्ठ	1.18.11
30	लोहिताक्ष	1.18.11
31	समविभक्ताङ्ग	1.1.11

अनुक्रम उदाहरण संदर्भ अनुक्रम उदाहरण संदर्भ

आङ्गिक उदाहरणों में भी सबसे अधिक महाबाहु यह विशेषण बार-बार प्रयुक्त है ।8 बार इसका प्रयोग हुआ है।इसके बाद प्रहृष्टवदन, महाबल, ज्येष्ठ ये 3 और 2 बार के अनुक्रम से उल्लिखित हैं ।

1.2 साहसिक विशेषण-

साहस से जुडे, पराक्रम दर्शक, शत्रुओं का नाश करना आदि विशेषताओं को दर्शाने हेतु प्रयोजित विशेषण साहसिक कोटि में आतें हैं । ऐसे 19 विशेषण नीचे कोष्टक में दर्शाए हैं-

साहसिकविशेषण

अनुक्रम उदाहरण संदर्भ

क्रम सं.	विशेषण	संदर्भ (सर्ग.श्लोक)
1	लघुपराक्रम	1.76.4
2	अमितौजस्	1.25.3, 1.31.21
3	अरिन्दम	1.1.10, 1.25.3, 1.26.6
4	दृष्टवीर्य	1.67.21, 1.68.16
5	प्रतापवान्	1.1.11, 1.76.21
6	भीमविक्रम	1.22.22
7	महायशस्	1.1.95, 1.22.6, 1.27.2, 1.27.12, 1.27.17, 1.30.23, 1.30.26, 1.67.17

8	महावीर्य	1.1.8
9	महोरस्क	1.1.10
10	यशस्वी	1.1.12
11	रिपुनिषूदन	1.1.13
12	विज्वर	1.1.85
13	वीर	1.1.24, 1.27.5, 1.30.26, 1.38.2
14	वीर्यवान्	1.1.2
15	शत्रुनिबर्हण	1.1.9, 1.4.30
16	शत्रुसूदन	1.1.57, 1.53.1, 1.54.6
17	सत्यपराक्रम	1.1.19, 1.1.35, 1.1.87, 1.18.26, 1.19.8, 1.19.14, 1.77.24
18	सुमहायशस्	1.1.36
19	सुविक्रम	1.1.10

उपर्युक्त उदाहरणों में से महायशस् विशेषण 10 बार प्रयुक्त हैं । महत् यशः यस्य सः (बहुव्रीहि समास) अर्थात् जिसका यश बहुत बडा है वह व्यक्ति। राम के कार्य बहुत ही बडे हैं, जैसे ऋषिमुनियों का रक्षण, यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों का संरक्षण, राक्षससंहार, राज्यस्थापना आदि । ये सभी कार्य उनके साहस के पर आधारित हैं। अतः वह साहसिक विशेषण कोटि में रखें गयें हैं।

उदाहरणार्थ, सत्यपराक्रम यह एक साहसिक विशेषण है जो बालकाण्ड में 7 बार प्रयुक्त है। जिसका पराक्रम सत्य है, शाश्वत है वह सत्यपराक्रम । यह अर्थ वाच्यार्थ से ही प्राप्त है। इसके अलावा रामायण की तिलक नामक टीका में भार्गवलोकप्रतिबन्ध सूचित करते है। यहाँ सत्य शब्द का अर्थ सत्यलोक है।

1.3 औपमिक विशेषण-

जिस विशेषण में उपमादी गयी है वह औपमिक विशेषण है। उपमया निर्दिष्टम् औपमिकः । यहां उपमा शब्द से ठक् प्रत्यय होकर औपमिक शब्द बना है । निम्नलिखित कोष्टक में इसके13 उदाहरण दर्शाए हैं ।

औपमिकविशेषण

अनुक्रम उदाहरण संदर्भ

क्रम सं.	**विशेषण**	**संदर्भ (सर्ग.श्लोक)**
1	महापर्वतसन्निभ	1.1.64
2	रत्नाढ्य	1.3.8
3	शैलेन्द्र	1.35.14
4	नरशार्दूल	1.39.22
5	अमरप्रख्य	1.20.24
6	नरवरात्मज	1.24.12, 1.26.1
7	नरव्याघ्र	1.38.17, 1.39.6, 1.45.16, 1.47.11
8	नरशार्दूल	1.23.2, 1.24.9, 1.27.8, 1.27.18, 1.28.13, 1.31.7, 1.31.11, 1.31.12, 1.42.9, 1.61.1
9	मुनिशार्दूल	1.60.16
10	पृथिवीसमः	1.1.18
11	कालाग्निसदृश	1.1.18
12	पुरुषव्याघ्र	1.29.23
13	पुरुषशार्दूल	1.25.1

उपरोक्त उदाहरणों में नृपशार्दूल यह 10 बार और नरव्याघ्र 5 बार प्रयुक्त हैं । यहाँ शार्दूल का अर्थ, शेर, बाघ (tiger) , अमरकोश में व्याघ्र अर्थ दिया है। अतः नृपशार्दूल का अर्थ है - वह व्यक्ति जो शेर समान है अथवा वह मनुष्य जो सभी मनुष्यों में श्रेष्ठ है; यहाँ शार्दूल का अर्थ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम भी है ।

1.4 सामाजिक विशेषण-

सामाजिकता को दर्शानेवाला विशेषण अर्थात जिसके द्वारा समाज संबन्धी जानकारी मिल सके वह विशेषण सामाजिक विशेषण है । ऐसे १३ सामाजिक विशेषण प्राप्त हुए हैं ।

सामाजिकविशेषण

अनुक्रम	**उदाहरण**	**संदर्भ**
1	सर्वसम	1.1.16
2	कृतकृत्य	1.1.85
3	कृतज्ञ	1.1.2
4	कृतार्थ	1.30.26
5	धन्यतर	1.55.15
6	लोकराम	1.18.29, 1.73.19
7	लोकार्थी	1.29.20
8	वरद	1.29.16
9	वश्य	1.1.12
10	सम	1.1.11
11	सर्वलोकप्रिय	1.1.15

12	सर्वलोकनमस्कृत	1.18.10
13	सुहृद्वृत	1.1.86

1.5 बौद्धिक विशेषण-

बुद्धिमत्ता को दर्शानेवाला विशेषण अर्थात जिसके द्वारा विशेष्य की बुद्धिसंबंधी जानकारी मिल सके वह विशेषण बौद्धिक विशेषण कहलाता है । निम्नलिखित कोष्टक में 9 बौद्धिक उदाहरण दर्शाए हैं ।

बौद्धिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	प्रतिभानवान्	1.1.15
2	महाप्राज्ञ	1.45.11
3	धीमान्	1.2.32
4	धृतिमान्	1.1.8, 1.21.6
5	बुद्धिमान्	1.1.9
6	महामति	1.3.7
7	वाग्मी	1.1.8, 1.1.9
8	विचक्षण	1.1.15
9	स्मृतिमान्	1.1.15

अभिधानचिन्तामणि, अमरकोश जैसे कोशों में मति, धृति, स्मृति, प्रज्ञा, प्रतिभाये सारे शब्द बुद्धि के पर्यायवाची शब्द बताए गए हैं । अतः उनसे बने विशेषण बौद्धिक विशेषणों में लिए हैं ।

1.6 राजकीय विशेषण-

राजा के संबन्ध दर्शानेवाला विशेषण राजकीय विशेषण कहलाता है । निम्नलिखित कोष्टक में बालकाण्ड में प्रयुक्त 9राजकीय उदाहरण दर्शाए हैं । लगभग इस मे राजपुत्र और नृपात्मज इन दो विशेषणों का लगभग 3 बार उल्लेख प्राप्त है।-

राजकीय विशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	पार्थिव	1.22.20
2	राजपुत्र	1.27.2, 1.27.17, 1.48.16
3	राजर्षिसुतः	1.77.29
4	नृपात्मज	1.27.8, 1.27.18, 1.27.21
5	नृपात्मजौ	1.30.3
6	नृवरात्मज	1.27.14
7	परिषद्गत	1.4.36
8	प्राप्तराज्य	1.4.1
9	राजसूनु	1.25.17

1.7 वांशिक विशेषण-

वंश को दर्शानेवाला विशेषण अर्थात जिसके द्वारा विशेष्य के वंश/कुल संबन्धी जानकारी मिल सके वह विशेषण वांशिक विशेषण कहलाता है । निम्नलिखित कोष्टक में 4वांशिक उदाहरण दर्शाए हैं ।

इस कोष्टक से पता चलता है कि रघुनन्दन विशेषण का प्रयोग 43 बार और राघव इस विशेषण का लगभग 61 बार उल्लेख प्राप्त है। इन विशेषणों का अधिक प्रयोग कुल की प्रतिष्ठा का सामाजिक महत्त्व, रघुकुल का जनमानस में माहात्म्य दर्शाता है । यहाँ रघुनन्दन, राघव, ऐक्ष्वाक जैसे विशेषणों से राम आदि विशेष्यों के वंश की जानकारी प्राप्त होती है ।

वांशिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	रघुनन्दन	1.11.23, 1.22.18, 1.23.12, 1.25.16, 1.27.9, 1.28.14, 1.30.22, 1.30.24, 1.31.11, 1.34.6, 1.34.10, 1.34.15, 1.35.19, 1.37.9, 1.37.14, 1.38.13, 1.38.15, 1.38.20, 1.39.1, 1.39.19, 1.39.21, 1.40.10, 1.40.26, 1.40.29, 1.41.1, 1.41.23, 1.42.3, 1.42.11, 1.42.12, 1.43.10, 1.43.35, 1.45.27, 1.45.36, 1.48.19, 1.55.4, 1.56.12, 1.61.11, 1.61.23, 1.62.1, 1.63.10, 1.64.20, 1.67.16, 1.77.2
2	रघुश्रेष्ठ	1.40.22
3	रघूत्तम	1.43.41, 1.65.5
4	राघव	1.1.54, 1.1.57, 1.1.63, 1.1.69, 1.1.70, 1.1.84,

		1.1.96, 1.3.21, 1.3.71, 1.14.17, 1.18.31, 1.19.12, 1.20.9, 1.21.7, 1.21.22, 1.22.15, 1.22.18, 1.23.14, 1.24.7, 1.24.28, 1.25.3, 1.25.15, 1.26.1, 1.26.9, 1.26.16, 1.26.17, 1.26.29, 1.27.1, 1.27.4, 1.27.6, 1.27.12, 1.27.15, 1.27.23, 1.27.24, 1.27.25, 1.28.10, 1.30.17, 1.30.23, 1.31.13, 1.34.1, 1.34.7, 1.35.15, 1.35.21, 1.37.22, 1.39.20, 1.44.19, 1.45.1, 1.45.5, 1.45.8, 1.45.14, 1.48.11, 1.48.13, 1.48.14, 1.51.13, 1.56.16, 1.57.2, 1.67.12, 1.68.16, 1.76.4, 1.76.15, 1.77.4
5	इक्ष्वाकुवंशप्रभव	1.1.8
6	ऐक्ष्वाक	1.24.13
7	ऐक्ष्वाकुनन्दन	1.18.11

1.8 नैतिक विशेषण-

नैतिक मूल्यों को दर्शानेवाला विशेषण अर्थात जिसके द्वारा नीति संबंधी जानकारी मिल सके वह विशेषण नैतिक विशेषण कहलाता है । निम्नलिखित कोष्टक में 7 नैतिक उदाहरण दर्शाए हैं ।

नैतिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	नीतिमान्	1.1.9
2	पात्रभूत	1.28.10
3	शुचि	1.1.12, 1.22.21, 1.28.1
4	श्रीमान्	1.1.9, 1.1.13, 1.1.39, 1.21.6, 1.76.21
5	सत्यवाक्य	1.1.2, 1.1.39, 1.3.5
6	सत्यसन्ध	1.1.12
7	सुव्रत	1.18.57, 1.21.6, 1.29.16, 1.76.20

1.9 मानसिक विशेषण-

मन की स्थिति, अर्थात् धैर्य, संयम, शान्ति, प्रसन्नता, गुणवत्ता इ. अन्तःकरण के वैशिष्ट्यों को दर्शानेवाला विशेषण इस गण में आता है। निम्नलिखित कोष्टक में बालकाण्ड में आए ऐसे 7 उदाहरण दर्शाए हैं ।

मानसिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	गुणवत्तर	1.77.25
2	गुणवान्	1.1.2
3	दुराधर्ष	1.28.2
4	दुर्धर्ष	1.48.31
5	प्रीतमनस्	1.27.28
6	संप्रहृष्टमनस्	1.35.10
7	सर्वगुणोपेत	1.1.17

1.10 औपाधिक विशेषण-

उपाधिको दर्शाने वाले विशेषण अर्थात जिसके द्वारा उपाधि संबंधी जानकारी मिल सके वह विशेषण औपधिक विशेषण कहलाते है । निम्नलिखित कोष्टक में 6 औपधिक उदाहरण दर्शाए हैं ।

औपाधिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	आर्य	1.1.16
2	नृप	1.25.20, 1.25.22
3	अप्रमेय	1.29.1
4	तात	1.61.11
5	मनुजश्रेष्ठ	1.45.33
6	वत्स	1.24.17, 1.67.12

1.11 धार्मिक विशेषण-

विशेष्य के जीवन में, उसकी दृष्टि से धर्म का महत्त्व, उसका धर्म के विषय में वर्तन इत्यादि वैशिष्ट्य जिस विशेषण से

दिखते हैं वह विशेषण यहां धार्मिक विशेषण कहा है । निम्नलिखित कोष्टक में ऐसे 6 उदाहरण दर्शाए हैं ।

धार्मिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	कृतस्वस्त्ययन	1.22.2
2	धर्मज्ञ	1.1.2, 1.1.12, 1.1.36
3	धर्मप्रधान	1.20.12
4	धर्मवीर्य	1.3.4
5	धर्मात्मा	1.1.29, 1.2.32, 1.3.5, 1.21.7
6	धर्मार्थगुणविस्तर	1.3.8

1.12 पौराणिकविशेषण-

पौराणिक व्यक्ति, घटना इत्यादि के संबन्ध दिखानेवाला विशेषण यहां पौराणिक विशेषण कहा है । निम्नलिखित कोष्टक में ऐसे 6 पौराणिक उदाहरण दर्शाए हैं ।

पौराणिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	कश्यप	1.29.10
2	पुत्र	1.18.11
3	पुत्रक	1.20.25
4	प्रजापतिसम	1.1.13
5	मधुहन्तृ	1.76.17
6	विश्वामित्रगत	1.22.4

1.13भावनिक विशेषण-

जिसके द्वारा विशेष्य की भावभावनाएं समझ में आए ऐसे विशेषण भावनिक विशेषण कहलाते है । निम्नलिखित कोष्टक में ऐसे 5 भावनिक उदाहरण दर्शाए हैं ।

भावनिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	अनसूयक	1.1.4
2	परमोदार	1.1.36, 1.27.25, 1.30.23
3	संप्रहृष्ट	1.1.84
4	सर्वप्रियकर	1.18.29
5	हृष्ट	1.26.34

1.14दैविक विशेषण-

विशेष्य की दिव्य शक्ति को सूचित करनेवाला विशेषण दैविक विशेषण कहलाते है । निम्नलिखित कोष्टक में 5दैविक उदाहरण दर्शाए हैं ।

दैविकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	द्युतिमान्	1.1.4, 1.1.8
2	देवेश	1.29.18
3	धाता	1.1.13
4	प्रभु	1.4.30
5	भगवान्	1.2.32

1.15 शैक्षणिक विशेषण-

विशेष्य का अध्ययन किस शास्त्र में हुआ है, उसकी उसमें गति कैसी है, उसे विद्या के प्रति श्रद्ध है अथवा नहीं है इत्यादि जानकारी इस प्रकार के विशेषणों से मिलती है।

शैक्षणिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	अकृतविद्य	1.20.7
2	विद्यासमुदित	1.22.22
3	विद्वान्	1.1.3
4	वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ	1.1.14
5	सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ	1.1.15

1.16 यौगिकविशेषण-

योगशास्त्र में जिन यमनियमादि का उपदेश है, उन विशेषताओं से संबन्धित विशेष्य की उपलब्धियां बतानेवाला विशेषण इस निम्नलिखित कोष्टक में दिखता है ।

यौगिकविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	एकाग्र	1.1.40
2	परमयन्त्रितः	1.77.22
3	वशी	1.1.8

4	समाधिमान्	1.1.12

१.१७ शस्त्रास्त्रसम्बन्धित विशेषण-

शस्त्रास्त्रविशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	गृहीतास्त्र	1.28.2
2	धन्विन्	1.22.6
3	महेष्वास	1.1.10
4	सधनु	1.76.5

रामायण के नायक और इस काव्य में आनेवाले लगभग सभी पुरुष पात्र किसी ना किसी शस्त्र से संबंधित हैं । विशेष्य कौनसा शस्त्र चलाने में समर्थ है, उसमें उसकी कैसी गति है, विशेष कौशल्य इत्यादि जानकारी इन विशेषणों से मिलेगी ।

1.18 आध्यात्मिक विशेषण-

आध्यात्मिक विशेषण

अनुक्रम	उदाहरण	संदर्भ
1	आत्मज	1.19.17
2	आत्मवान्	1.1.4
3	महात्मा	1.1.35, 1.1.84, 1.18.21, 1.19.14, 1.45.8, 1.68.9

2.संकीर्ण विशेषण-

अधिकांश विशेषणों में से जो विशेषण उदाहरण की वारंवारता के कारण 1-2 उदाहरणों तक सीमित हैं उन्हे संकीर्ण विशेषण की रूप संकलित किया है। सभी ७ विशेषणों को मिलाकर प्रतिशत औसत 4.01% है।ये 7 विशेषण प्रकार आर्थिक, कीर्ति, देशिक, नैसर्गिक, पैतृक, वैदिक, साहचरिक हैं ।

संकीर्णविशेषण

अनुक्रम	विशेषणप्रकार	विशेषण	संदर्भ
1	आर्थिक	लक्ष्मीवान्	1.1.11
2	कीर्ति	अतियशस्	1.77.24
3	देशिक	अयोध्याधिपति	1.61.5
4	नैसर्गिक	हिमवान्	1.35.13
5	पैतृक	दशरथात्मज	1.1.58, 1.26.34 , 1.48.32 , 1.48.31 , 1.67.21 , 1.67.22
6	पैतृक	दाशरथि	1.66.26 , 1.74.24 , 1.75.1, 1.76.1, 1.76.21 , 1.76.24 , 1.77.1
7	वैदिक	सर्वश्रुतिमनोहर	1.3.8
8	साहचरिक	सलक्ष्मण	1.22.1, 1.25.3, 1.30.25 , 1.36.27 , 1.45.1, 1.50.2
9	साहचरिक	सहसौमित्रि	1.31.21 , 1.34.23

3.संमिश्र विशेषण-

अधिकांश और संकीर्ण में उल्लिखित विशेषण जो दो या अधिक मिलकर बनें हैं उन्हे संमिश्र विशेषण के रूप में संकलित किया हैं । ये 44 विशेषण के 2-2 और 3-3-4 के संमिश्र विशेषणों के गण है ।

संमिश्र विशेषण

अनु.	विशेषणप्रकार	विशेषण	संदर्भ
1	आङ्गिक / पौराणिक	काकपक्षधर	1.19.9, 1.22.6
2	आङ्गिक / मानसिक	समर्थ	1.1.3

3	आङ्गिक / औपमिक	दुन्दुभिस्वन	1.18.11
4	आङ्गिक / दैविक	दिव्यलक्षणसंयुत	1.18.10
5	औपमिक / वांशिक / मातृक	कौसल्यानन्दवर्धन	1.1.17, 1.68.15 , 1.73.26
6	औपमिक / आङ्गिक	अमिततेजस्	1.18.12
7	औपमिक / आङ्गिक	राजीवलोचन	1.1.41, 1.19.18 , 1.20.2, 1.22.4, 1.30.14
8	औपमिक / औपाधिक	नरश्रेष्ठ	1.27.6, 1.31.6, 1.31.8, 1.38.24 , 1.43.3, 1.45.39 , 1.46.8, 1.46.9, 1.47.19 , 1.48.15 , 1.61.16 , 1.62.27 , 1.67.17 , 1.75.12
9	औपमिक / औपाधिक	नरोत्तम	1.22.17 , 1.23.17 , 1.25.17
10	औपाधिक / औपमिक	राजशार्दूल	1.19.8
11	औपाधिक / औपमिक	अक्षय्य	1.76.17
12	औपाधिक / औपमिक	पुरुषोत्तम	1.18.30 ,
			1.29.12 , 1.39.5
13	औपाधिक / औपमिक / वांशिक	राघवसिंह	1.3.25
14	दैविक / राज्ञीय	जगन्नाथ	1.18.10
15	नैतिक / आङ्गिक	शुभदर्शन	1.23.16 , 1.26.33
16	नैतिक / आङ्गिक	शुभलक्षण	1.1.11
17	नैष्ठिक / भावनिक	दृढव्रत	1.1.2, 1.26.1
18	भावनिक / आध्यात्मिक	अभिप्रेत	1.19.17
19	भावनिक / आध्यात्मिक	अभिराम	1.3.7
20	भावनिक / पुरुषार्थ	कामार्थगुणसंयुक्त	1.3.8
21	भावनिक / मानसिक	मुदान्वित	1.77.29
22	भावनिक / मानसिक	शोकसन्तप्त	1.1.54
23	भावनिक / मानसिक	सुप्रीत	1.29.16
24	मानसिक / भावनिक	प्रिय	1.1.23
25	मानसिक / भावनिक	परमप्रीतः	1.1.43
26	मानसिक / भावनिक / यौगिक	जितक्रोध	1.1.4
27	यौगिक / आध्यात्मिक	नियतात्मा	1.1.8
28	यौगिक / आध्यात्मिक	निर्वीर्य	1.76.11
29	यौगिक / आध्यात्मिक	प्रशान्तात्मा	1.77.1
30	यौगिक / आध्यात्मिक	प्रसन्नात्मा	1.27.26

31	यौगिक / आध्यात्मिक	महातपस्	1.36.5
32	यौगिक / आध्यात्मिक	महातेजस्	1.1.57, 1.18.26 , 1.24.6, 1.27.28 , 1.29.19 , 1.31.22 , 1.69.17
33	यौगिक / आङ्गिक	तपोमूर्ति	1.29.12
34	यौगिक / आङ्गिक	जितेन्द्रिय	1.1.39
35	यौगिक / आध्यात्मिक	तपात्मक	1.29.12
36	यौगिक / आध्यात्मिक	तपोमय	1.29.12
37	यौगिक / आध्यात्मिक	तपोराशि	1.29.12
38	वांशिक / भ्रातृ	भरताग्रज	1.1.38, 1.4.29
39	वांशिक / पौराणिक	काकुत्स्थ	1.19.16 , 1.22.20 , 1.24.17 , 1.25.17 , 1.26.25 , 1.26.27 , 1.27.12 , 1.27.27 , 1.28.1, 1.28.3, 1.28.11 , 1.28.15 , 1.28.16 , 1.30.25 , 1.31.11 , 1.34.6, 1.34.14 , 1.36.4, 1.37.27 , 1.37.32 , 1.38.1, 1.39.3, 1.39.6, 1.39.8, 1.39.10 , 1.40.15 , 1.40.30 , 1.45.34 , 1.47.10 , 1.49.9, 1.49.18 , 1.57.10 , 1.58.12 , 1.68.16 , 1.75.12 , 1.75.14 , 1.75.28 , 1.76.14 , 1.76.19
40	शैक्षणिक / आध्यात्मिक	ज्ञातुकाम	1.24.6
41	शैक्षणिक / आध्यात्मिक	ज्ञानसम्पन्न	1.1.12
42	शैक्षणिक / बौद्धिक (सजग)	संज्ञावान्	1.20.1

43	साहसिक / नैष्ठिक / नैतिक / औपाधिक	अनघ	1.1.89, 1.22.16 , 1.27.11 , 1.37.18

निष्कर्ष-

रामायण के बालकाण्ड में राम के लिए प्रयुक्तविशेषणों को संकलित कर उनका वर्गीकरण करना यह प्रमुख उद्देश था । इसके अनुरूप यहाँ राम के सभी विशेषणों को संकलित कर उन्हे तीन प्रमुख गणों में विभाजित किया है- 1. अधिकांश विशेषण गण 2. संकीर्ण विशेषण गण और 3. संमिश्र विशेषण गण ।

1.संमिश्र विशेषण-

इस आकृति से स्पष्ट है कि संमिश्र प्रकार के

विशेषणों का प्रमाण अधिक है । इन संमिश्र

विशेषणों में आङ्गिक/औपमिक, आङ्गिक/दैविक,

आङ्गिक/पौराणिक, आङ्गिक/मानसिक, औपमिक/आङ्गिक,

नैतिक/आङ्गिक, शैक्षणिक/आध्यात्मिक,

शैक्षणिक/बौद्धिक, साहसिक/नैष्ठिक/नैतिक/औपाधिक,

साहसिक/शस्त्रास्त्र, आदि संमिश्र विशेषण प्रकारों कुल संख्या 44 है।

2.अधिकांश विशेषण-

अधिकांश विशेषण 18 प्रकार के हैंजिनमें आङ्गिक, साहसिक, औपमिक, सामाजिक, बौद्धिक, राजकीय, वांशिक, नैतिक, मानसिक, औपाधिक, धार्मिक, पौराणिक, भावनिक, दैविक, शैक्षणिक, यौगिक, शस्त्रास्त्र, आध्यात्मिक समावेश हैं ।

3.संकीर्ण विशेषण-

संकीर्ण विशेषणों के प्रकार की संख्या ७ हैं जिनमें आर्थिक, कीर्ति, देशिक, नैसर्गिक, वैदिक, पैतृक, साहचरिक अन्तर्भूत हैं ।

संदर्भग्रंथसूची

- Apate, V. S. (1890). Apate Sanskrit dictionary.Pune: Department of Sanskrit Studies, University of Hyderabad, Hyderabad.http://sanskrit.uohyd.ac.in/cgi-bin/scl/SHMT/options1.cgi?word=%E0%A4%AA%E0%A4%B0&outencoding=DEV पासून प्राप्त
- Bhaṭṭācārya, T. T. ((1962).). Vachaspatyam: (a comprehensive Sanskrit dictionary). .Benares: Benares: Chowkhamba Sanskrit Series Office.
- Krishnamacharya, T. (1924). Brihad Dhatu Rupavali .Trivendram: Bhaskar Preess.
- Misra, H. (1999). Brihad Dhatu Kusumakara.Delhi: Chaukhmba Sanskrit Pratishthan.
- MONIER-WILLIAMS, M. (1899). A Sanskrit-English dictionary: Etymologically and philologically arranged with special reference to Cognate indo-european languages.Oxford: The Clarendon Press.
- Mudholkar, S. S. (1983). Ramayan of Valmiki, with commentories, Tilak, Ramayanashiromani, Bhushan, Balkand, Vol. I.New Delhi: Parimal Publication.
- rai, R. (1965). वाल्मीकिरामायणकोशः.Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Series office.
- Sharma, R. (2002). The aṣṭādhyāyī of pāṇini vol.01 & 2.New Delhi: Munshilal Manoharlal Publishers PVT.LTD. post box 5715.
- Vasu, V.,&Vasu, H. (1808-1814 Saka era, (1866-)). Sabdakalpadruma.Calcutta: Calcutta.
- बाहादुर, र. (1961). शब्दकल्पद्रुमः, वरदाप्रसाद-वसुना तदनुजेन हरिचरण-वसुना च अशेषशास्त्रविशारदकोविदवृन्दसाहाय्येन संपरिवर्द्धितः. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस.